IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

# श्रीराम शर्मा आचार्य के दार्शनिक विचार एवं चेतना

**अखिलेश चन्द्र**[1*] **डा०शैल ढाका**[2**]
शोधार्थी[1*] शोध निर्देशिका[2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1, 2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

**सारांश**

भारत के आध्यात्मिक इतिहास में, देश की सांस्कृतिक और नैतिक छवि को आकार देने में गहन ज्ञान और आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि वाले ऋषियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। इन चमकदार शख्सियतों में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य भी शामिल हैं, जो एक आधुनिक ऋषि थे, जिन्होंने समकालीन समाज की मांगों को पूरा करने के लिए प्राचीन ऋषि परम्परा को पुनर्जीवित किया। उनके जीवन का कार्य प्रेरणा का प्रतीक रहा है, जिसने दुनिया भर में पवित्र आदर्शों और वास्तविक आध्यात्मिकता के प्रति गहरी श्रद्धा पैदा की है।

**कुंजी शब्द–** श्री राम शर्मा आचार्य, दार्शनिक विचार

**प्रस्तावना**

अशांत दुनिया में पवित्रता का एक प्रकाश स्तंभ अक्सर अराजकता और अस्थिरता से जूझती दुनिया में, शुद्ध हृदय वाले व्यक्तियों की उपस्थिति सांत्वना और आशा के स्रोत के रूप में कार्य करती है। ये आत्माएं, सत्य की खोज में दृढ हैं, क्षणभंगुर इच्छाओं और भ्रामक आकर्षणों की उलझनों को पार करती हैं, और खुद को दुनिया की भलाई के लिए समर्पित करती हैं। उनका अटूट विश्वास और निस्वार्थ कार्य न केवल हमारे जीवन में संतुलन और सुंदरता लाते हैं बल्कि मानवता की सामूहिक चेतना को भी ऊपर उठाते हैं।

पीडा के बीच बुद्धि का विरोधाभास पृथ्वी पर मौजूद बुद्धि और कौशल की प्रचुरता के बावजूद, पीडा, गरीबी और नैतिक गिरावट की व्यापकता मानवता की दिशा के बारे में गहरे सवाल उठाती है। बुद्धिमान अक्सर अपने ही बनाए जाल में फंस जाते हैं और दुष्टता और धोखे पर बनी सफलता की निरर्थकता को पहचानने में असफल हो जाते हैं। ब्रह्मांडीय आत्मा, अपनी अनंत अनुभूति के साथ, यह सुनिश्चित करती है कि सत्य अंततः सामने आए, और इस तरह के प्रयासों के खोखलेपन को उजागर करता है।

सांसारिक पीडा को देखने का हृदय का दर्द मानवता की सामूहिक पीडा दयालु आत्माओं के भीतर गहरी बेचैनी पैदा कर सकती है। यह सहानुभूति, एक माँ की अपने बच्चे के दर्द को कम करने की तत्परता के समान, उन लोगों के लिए एक प्रेरक शक्ति बन जाती है जो दुनिया के घावों को ठीक करना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति व्यक्तिगत आराम और भौतिक सुखों को त्याग देते हैं, इसके बजाय अपना जीवन दूसरों के दुखों को दूर करने में समर्पित कर देते हैं।

निस्वार्थ सेवा का आह्वान उन लोगों के लिए जिन्होंने **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'–** सभी प्राणियों में स्वयं को देखना–के सिद्धांत को आत्मसात कर लिया है–दुनिया का दर्द उनका अपना बन जाता है। यह गहन सहानुभूति निस्वार्थ भाव से मानवता की सेवा करने के लिए एक निरंतर अभियान को बढावा देती है। उनके जीवन का

असली माप प्रशंसा या उपलब्धियों में नहीं बल्कि वैश्विक मानव परिवार में शांति और खुशी लाने के अथक प्रयासों में है।

**पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बहुमुखी जीवन**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने असाधारण समर्पण के साथ कई भूमिकाएँ निभाते हुए एक अनुकरणीय जीवन जीया। उनके जीवन का कार्य पांच अलग—अलग क्षेत्रों में फैला रहा।

**अनुकरणीय गृहस्थ**

उनके पारिवारिक जीवन ने गृहस्थों के लिए अनुकरणीय मानक स्थापित किए।

**भक्त और साधक**

उनकी आध्यात्मिक प्रथाएं एक सामान्य भक्त की तुलना में कहीं अधिक थीं।

**विद्वान**

उनके गहन ज्ञान ने जीवन के सभी पहलुओं को छुआ, जिससे उन्हें एक चलते—फिरते विश्वकोश की प्रतिष्ठा मिली।

**विपुल लेखक और लेखिका**

3000 से अधिक प्रकाशित रचनाओं के साथ, उनका साहित्यिक योगदान अद्वितीय है।

**एक वैश्विक संगठन के संस्थापक**

उनके द्वारा स्थापित अंतर्राष्ट्रीय गायत्री परिवार, आध्यात्मिक रूप से जागृत दुनिया के उनके दृष्टिकोण का एक प्रमाण है।

**आधुनिक समय के लिए प्राचीन ज्ञान का पुनरुद्धार युग**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी टिप्पणियाँ और **'प्रज्ञा पुराण'** की रचना समकालीन मुद्दों को संबोधित करती है, जो आधुनिक समाज के अनुरूप समाधान पेश करती है।

**नैतिक और सामाजिक क्रांति के चौंपियन**

एक स्वतंत्रता सेनानी और दूरदर्शी नेता के रूप में, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भारत की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद के उनके प्रयास तीन क्रांतियों— विचार क्रांति, नैतिक क्रांति और सामाजिक क्रांति के माध्यम से समाज को सदियों पुरानी मानसिक गुलामी से मुक्त कराने पर केंद्रित थे।

**वैज्ञानिक आध्यात्मिकता के समर्थक**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान के बीच की खाई को पाटते हुए वैज्ञानिक आध्यात्मिकता का एक नया प्रतिमान पेश किया। उनके काम ने आंतरिक स्व और आत्मा की समग्र समझ की नींव रखी।

**21वीं सदी के लिए उज्ज्वल भविष्य की घोषणा**

आधुनिक वैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों की गंभीर भविष्यवाणियों के विपरीत, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने मानवता के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की। उन्होंने एक ऐसी दुनिया की कल्पना की जहां पवित्र संवेदनशीलता और सद्भावना की सामूहिक जागृति, वैज्ञानिक प्रगति के जिम्मेदार उपयोग के साथ मिलकर, सतयुग से भी आगे निकलने वाले युग की शुरुआत करेगी।

**सौर आध्यात्मिक प्रथाओं का महत्व**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने सौर आध्यात्मिक प्रथाओं, विशेष रूप से गायत्री मंत्र के जप के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने व्यक्तिगत और वैश्विक कल्याण के लिए उनके गहन लाभों पर प्रकाश डालते हुए इन प्रथाओं को व्यापक रूप से अपनाने की वकालत की।

**महाशक्ति यज्ञ के विज्ञान युग**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी यज्ञ की अवधारणा को फिर से परिभाषित किया, उन्हें पर्यावरण, पारिस्थितिकी और व्यक्तिगत उपचार के लिए दूरगामी लाभों के साथ विशेष अनुष्ठानों से समावेशी प्रथाओं में बदल दिया। यज्ञोपैथी के प्रति उनका अभिनव दृष्टिकोण भविष्य में समग्र उपचार के लिए एक अग्रणी पद्धति होने का वादा करता है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन और शिक्षाएं अनगिनत व्यक्तियों को उनकी आध्यात्मिक यात्राओं के लिए प्रेरित करती रहती हैं। उनकी विरासत करुणा, ज्ञान और निस्वार्थ सेवा में निहित जीवन जीने की परिवर्तनकारी शक्ति का एक प्रमाण है।

**पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के द्वारा वर्णित दार्शनिक चेतना**

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए इसका तार्किक एवं विश्लेषणात्मक उत्तर देते हुए वैज्ञानिकों से अपील करते हैं कि, 'रासायनिक पदार्थों के मिश्रण से नये पदार्थ या प्रवाह तो बनते हैं परन्तु वे बोध रहित होते हैं। आग एवं पानी के सहयोग से वाष्प तो बनती है परन्तु वह बोध रहित होती है। पदार्थों के घर्षण से विद्युत उत्पादन तो होता है परन्तु उसमें ज्ञान कहाँ होता है। वे तो यहाँ तक कहते हैं कि यदि यह मान लिया जाय कि परमाणुओं के संयोग से सृष्टि बनी है तो प्राणियों में जो अहम् बोध पाया जाता है क्या वह भी उसी अणु सम्मिलन का परिणाम है? क्या वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृत यंत्रों में यह अहम् है? क्या नदी, पर्वत, खाद्य पदार्थों में आत्मबोध है, भाव संवेदना है? यदि ऐसा संभव होता, तो जड़ पदार्थ भी चेतन प्राणियों की भाँति अपनी योजनायें बनाते एवं इच्छा पूर्ति हेतु स्वेच्छापूर्वक स्वतन्त्र गतिविधियां करते।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने ईश्वर के स्वरूपादि के सम्बन्ध में अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक विचार करते हुए और ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हुए अपनी पुस्तक 'ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है' में स्पष्ट लिखा

है कि, 'बिना कर्ता के क्रिया हो ही नहीं सकती। रंग एवं ब्रुश आदि सभी उपकरण रहने पर भी क्या बिना चित्रकार के चित्र बनेगा? सृष्टि के जड़ पदार्थों को चेतना प्रदान करने वाला कोटि—कोटि जीवों को रचने वाला सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिशाली कारीगर अवश्य होगा।

'ईश्वरवादी' दार्शनिक सम्प्रदाय में भी ईश्वर के स्वरूपादि के सम्बन्ध में विचार—विमर्श किया गया है। यहाँ तक कि जो दर्शन अनीश्वरवादी हैं, वे भी ईश्वर की सत्ता के निषेध में तर्क प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार दर्शन—ग्रन्थों में ब्रह्म जिज्ञासा को प्रथम और प्रधान स्थान प्राप्त है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वितीय इकाई जीव और परमात्मा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार वस्तुओं के मिलन से, तीसरी वस्तु बनती है, दिन और रात के मिलन की बेला संध्या कहलाती है। उसी प्रकार पंचभौतिक प्रकृति (शरीर) एवं परमात्मा के सहयोग से तीसरी सत्ता जीव उत्पन्न होती है। परमात्मा चेतन व शरीर जड़ हैं, अत: जीव ब्रह्म से उत्पन्न होने के कारण चेतन है। परमात्मा चेतन है, इसलिए जीव में उसके गुण आत्मिक चेतना, अन्त:करण एवं भावना के रूप में विद्यमान हैं। वस्तुत: शरी जड़ है, जीव की चेतना से ही वह क्रियाशील है। सत्, चित् व आनन्द का मिश्रित स्वरूप ब्रह्म (परमात्मा) हम इन्हें प्राप्त करना चाहते हैं, अत: प्राप्ति की प्रवृत्ति हमारी प्रकृति है।

दर्शन का मूल उद्देश्य ही यह है कि वह ब्रह्म जीवात्मा आदि का साक्षात्कार कराता हुआ सांसारिक बंधनों से मानव को मुक्त करके नि:श्रेयस अथवा पारलौकिक उन्नति की ओर अग्रसर करता है अर्थात् दर्शन अर्न्तज्ञान, शक्ति, तर्क, भाव, संवेदन और दूरदर्शी विवेक पर अवलम्बित है।

दर्शन को आधार मानकर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने कहा है कि, 'मनुष्य शरीर में प्रसुप्त देवत्व का जागरण करना ही आज की सबसे बड़ी ईश्वर पूजा है। युग धर्म इसी के लिए प्रबुद्ध आत्माओं का आहवान कर रहा है। नवयुग की आधार शिला यही है। मनुष्य की आन्तरिक संकीर्णता एवं अविवेकग्रस्त स्थिति का अन्त किए बिना उज्जवल भविष्य की आशा अन्य किसी प्रकार नहीं की जा सकती है। इस महान कार्य को भौतिक स्तर पर किए गए उथले क्रिया—कलापों द्वारा सम्पन्न नहीं किया जा सकता। इनके लिए अधिक गहराई में उतरना होगा और उस स्तर पर प्रयत्न करना होगा जहाँ से मानवीय अन्त:करण को स्पर्श एवं प्रभावित किया जा सके। अन्त:करण का परिवर्तन मात्र भौतिक साधनों एवं प्रयत्नों से सम्पन्न नहीं हो सकता, उसके लिए तो आध्यात्म ही आधार है।

इस प्रकार पाँच कोशों की प्रचण्ड सामर्थ्य से अवगत कराते हुए पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का विवेचन है कि, 'पाँच प्राणों से चेतना एवं पाँच तत्वों से काया का निर्माण हुआ है। इन दोनों प्रवाहों के मध्य अर्थात पाँचों प्राण एवं पाँचों तत्वों की मध्यवर्ती दिव्यशक्तियों के प्रवाहों को पाँच कोश कहते हैं। ये पाँचों कोश रत्न भण्डार हैं, जिनमें सिद्धियों और विभूतियों के मणिमुक्तक प्रचुर परिमाण में भरे पड़े हैं।'

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने इन पाँच कोशों को तीन वर्गों में विभक्त किया है, स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर एवं कारण शरीर। अन्नमय कोश एवं प्राणमय कोश में पाँच तत्वों का समावेश होता है। 'सूक्ष्म शरीर' में मनोमय कोश और विज्ञानमय कोश सम्मिलित हैं। कारण शरीर के अर्न्तगत आनन्दमय कोश आता है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने तप—साधना में प्रमुखत: 'गायत्री मन्त्र' को मान्यता दी है जिसका दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विवेचन उच्च स्तरीय साधना हेतु, इसका आलंकारिक स्वरूप पाँच मुख वाला बनाया गया है। जीवात्मा का शरीर पाँच भागों में विभक्त है—

1- अन्नमय कोश
2- प्राणमय कोश
3- मनोमय कोश
4- विज्ञानमय कोश
5- आनन्दमय कोश

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य पाँच कोशों का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि अन्नमय कोश इन्द्रियजन्य चेतना है। प्राणमय कोश जीवन शक्ति है। मनोमय कोश विचार बुद्धि है, तो विज्ञानमय कोश चेतन सत्ता एवं भाव—प्रवाह है तथा आनन्दमय कोश आत्मबोध एवं आत्मशक्ति जाग्रति है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के मतानुसार पाँचों कोशों पर अधिकार प्राप्त कर लेने वाला व्यक्ति देव पुरूषों की श्रेणी में आने में सक्षम हो सकता है। ऐसे व्यक्ति असामान्य कार्य को भी सामान्य ढंग से करते हैं। आचार्य जी पाँचों कोशों की स्थितियों का वर्णन तात्विक रूप से भी किया है। जब तक जीव की स्थिति 'अन्नमय कोश' प्रधान होती है, तब तक वह अपने को स्त्री, पुरूष, काला, गोरा आदि शारीरिक भेदों से पहचानता है। जब जीवन प्राणमय कोश में स्थित होता है, त बवह गुणों के आधार पर अपने को जानता है जैसे लेखक, वक्ता एवं वैज्ञानिक आदि।

मनोमय कोश की स्थिति में मान्यता स्वभाव के आधार पर होती है जैसे— लालची, संयमी, स्वार्थी एवं दयालु आदि। विज्ञानमय कोश में पहुँचकर जीव यह अनुभव करता है कि वह शरीर गुणों आदि से ऊपर अविनाशी आत्मा है। अंत में आनन्दमय कोश की भूमिका में जीव को सर्वत्र परमात्मा की शक्ति का अनुभव होता है। इस प्रकार गायत्री—मन्त्र की साधना से इन पाँचों कोश के अद्भुत गुणों की उपलब्धि हो सकती है।

साधना का जप, ध्यान, हवन व संयम का स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण का तीनों शरीरों पर प्रभाव पड़ता है। उसे नए और पुराने संस्कारों का परिशोधन—परिष्करण करने के लिए यह साधना विद्या दूरगामी परिणाम उत्पन्न करती है। जिससे व्यक्ति में चेतना का विकास होता है, चेतनता विचारों को जन्म देती है, विचारों से व्यक्ति की मन:स्थिति में स्थायित्व आता है।

चेतना व्यक्ति को कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करती है जिस प्रकार कमल की नाल पानी में रहती है, परन्तु उसके पत्ते जल की सतह से सदा ऊँचे रहते हैं, उसमें डूबते नहीं हैं उसी प्रकार कर्मयोगी का भी यही आदर्श होना चाहिए, संसार में रहकर श्रेष्ठ कर्मों को पूर्ण मनोयोग के साथ करना चाहिए, संसार में आसक्त नहीं रहना चाहिए।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के दार्शनिक चेतना सम्बन्धी विविध दर्शनों पर विचार करने के बाद कहा जा सकता है कि दार्शनिक चेतना षटचक्रों का एक चक्र है जो कुण्डलिनी जागरण में महाशक्ति के रूप में विकसित करता है। प्रतिभा सम्पन्न तथा अत्यधिक क्षमतावान व्यक्ति, कुण्डलिनी शक्ति की जागृत अवस्था के उदाहरण हैं। यह शक्ति हर मनुष्य में बीज रूप में विद्यमान है। इसलिए हमें अपने सम्पूर्ण विकास एवं चेतन हेतु प्रसुप्त शक्तियों को जागृत करना होगा।

**निष्कर्ष**

मनुष्य का मस्तिष्क सबल बनाता है। सत्य के लिए असत्य के सहारे की आवश्यकता नहीं होती है। सत्यवादी के लिए समस्त भौतिक वस्तुएँ तिनके के बराबर होती हैं। आचार्य जी धर्म के नाम पर रूढ़ियों, कुरीतियों व आडम्बर के विरूद्ध थे। धर्म तो दया, क्षमा, करूणा, आत्मीयता जैसे दैवी गुणों से युक्त होता है। जो भी कर्म व्यक्ति तथा प्रत्येक जीव—जन्तु के लिए हितकारी हो वही धर्म है। आचार्य जी का अन्तिम उद्देश्य परम सत्य का साक्षात्कार करना मानते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'युगदृष्टा का जीवन—दर्शन', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'जीवन देवता की साधना—अराधना', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'गायत्री महाविद्या का तत्व—दर्शन', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'व्यक्तित्व विकास हेतु उच्च स्तरीय साधनाएँ', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'विज्ञान और आध्यात्म परस्पर पूरक', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'भविष्य का धर्म: वैज्ञानिक धर्म', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा, 'युग परिवर्तन कैसे और कब', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।